Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 1, January-2019, ISSN 2230-7540

हिन्दी कविता में प्रगतिवादी स्वर

Parveen Devi*

M.A., M.Phil., Net, M.D.U., Rohtak, Haryana

सार - *साहित्य में किसी भी काव्यधारा का न तो एकाएक प्रवर्तन होता है और न ही किसी नई काव्यधारा में केवल नए कवियों का योगदान होता है। हिन्दी साहित्य में यह देखा गया है कि जब किसी नई काव्यधारा का प्रवर्तन होता है तब उससे पूर्ववर्ती काव्यधारा से जुड़े कवि भी उसमें अपना योगदान देने लगते हैं। ऐसी दशा में इन कवियों की गणना दोनों काव्यधाराओं में होती है। हिन्दी कविता में छायावाद के स्तम्भों में शामिल 'निराला' व सुमित्रानन्दन पंत की कविताओं से प्रगतिवादी स्वर की शुरुआत होती है। प्रगतिवादी काव्यधारा के विकास में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियाँ सहायक होती हैं, साथ ही छायावाद की जीवनशून्य होती हुई व्यक्तिवाद, छायावादी काव्यधारा की प्रतिक्रिया भी उसमें शामिल थी। भारतीय बुद्धिजीवी एक ओर अपने समाज में उत्पन्न अनेक सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक विसंगतियों और संकटों को देख रहा था। दूसरी ओर वह रूस के उस समाज को देख रहा था जो इन विसंगतियों और संकटों से गुजरकर एक ऐसी व्यवस्था स्थापित कर रहा था जिसमें सामान्य जनजीवन को महत्ता प्राप्त हो रही थी। वैसे तो हिन्दी काव्यधारा में प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना (सन् 1936) से लेकर तारसप्तक (1943) तक की कविता को प्रगतिवादी कविता माना जाता है, परन्तु इस कालखण्ड से पहले व बाद के कवियों की कविताओं में भी प्रगतिवादी स्वर देखने को मिलता है। प्रगतिवादी कविता जीवन के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। यह अर्थ को ही समस्त विषमताओं का आधार मानता है। और उसके सामाजिक विभाजन पर ही बल देता है। पूंजीवादी व्यवस्था में शोषक व शोषित के बीच आर्थिक खाई लगातार बढ़ती जाती है। इस प्रकार प्रगतिवादी कवि पूंजीवादी परम्परा को खत्म कर समाजवाद की स्थापना करना चाहता है।*

कुंजी शब्द: *प्रवर्तन, व्यक्तिवाद, समाजवाद, धार्मिक, राजनीतिक परिस्थितियाँ, शोषक, वैज्ञानिक दृष्टिकोण।*

----------X----------

विषय वस्तु

सुमित्रानन्दन पंत के काव्य 'युगान्त' से हम छायावाद का अंत और प्रगतिवादी स्वर का आरंभ मानते हैं। परन्तु उससे भी पहले 'निराला' की कविता 'बादल राग' में हम प्रगतिवादी चेतना का स्वर सुन सकते हैं। कवि ने बादल को 'क्रान्तिदूत' माना है जो अपनी गर्जना से एक ओर तो छोटे-छोटे पौधों को नवरस व नवजीवन प्रदान करता है। दूसरी ओर इसकी गंभीर गर्जना को सुनकर पूंजीपति काँप उठते हैं। वे कहते हैं -

बार-बार गर्जन वर्षण है मूसलधार

हृदय थाम लेता संसार

सुन-सुन घोर वज्र हुँकार

हँसते हैं छोटे पौधे लघु भार

शस्य अपार

हिल-हिल, खिल-खिल

हाथ हिलाते, तुझे बुलाते

विप्लव रस से छोटे ही हैं शोभा पाते।।[1]

प्रगतिवाद तक आते-आते निराला का स्वर पूंजीपति समाज के प्रति अत्यन्त उग्र हो चुका था। जिसे उन्होंने 'कुकरमुत्ता' कविता में 'गुलाब' के माध्यम से प्रकट किया है। कुकरमुत्ता कविता के उदाहरण देखिए -

''अबे सुन बे गुलाब,

भूल मत जो पाई खुशबू रंगों आब

खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट

डाल पर इतरा रहा कैपेटलिस्ट।''[2]

www.ignited.in

तू हरामी खानदानी

रोज पड़ता रहा पानी

इसी प्रकार निराला की 'भिक्षुक', 'वह तोड़ती पत्थर' आदि कविताओं में भी प्रगतिवादी स्वर मिलता है।

'युगांत' कविता में सुमित्रानन्दन पंत कहते हैं कि जो पुराना है उसे नष्ट कर दो और नवीन के लिए स्थान खाली कर दो। 'युगान्त' कविता का उदाहरण -

"गा कोकिल बरसा पावक कण,

नष्ट भ्रष्ट हो जीर्ण पुरातन।।[3]

'युगवाणी' कविता में कवि का दृष्टिकोण माक्र्सवाद से प्रभावित है जो शोषण करने वाले पूँजीपतियों की भत्र्सना और शोषितों के प्रति सहानुभूति प्रकट करता है।

हिन्दी काव्यधारा में प्रगतिवाद आते-आते कवियों की एक परिपाटी तैयार हो गयी थी जो प्रगतिवादी चेतना से युक्त काव्य की रचना कर रहे थे। इन कवियों में मुख्य रूप से केदारनाथ अग्रवाल, नागार्जुन, त्रिलोचन, रांघेय राघव व शिवमंगल सिंह 'सुमन' आदि शामिल थे। इन कवियों ने जिन सामाजिक परिस्थितियों को देखा उनका अपने काव्य मंे वर्णन किया। केदारनाथ अग्रवाल ने अपनी कविता 'चित्रकूट के यात्री' में भारतीय समाज की धर्मान्धता पर करारा व्यंग्य किया है -

चित्रकूट के बौड़म यात्री, सतुआ गुड़ गठरी में बांधे,

गठरी को लाठी पर साधे, लाठी को कांधे पर टांगे।

दिनभर अधरम करने वाले, पर नर को ठगने वाले।

पर सम्पत्ति को हरने वाले।[4]

समाज में व्याप्त रंगभेद, वर्गभेद व जातिगत भेद को रांगेय राघव ने इस प्रकार व्यंग्य के साथ प्रस्तुत किया है -

जीवन भर श्रम करता कोई,

नहीं पेट भर खा पाता

और आलसी-वर्ग मजे में अधिकारों का निर्माता।।

डॉ. महेन्द्र भटनागर भी अपनी कविता टूटती शृंखला में दर्शाता है कि उसका तो एकमात्र उद्देश्य सर्वहारा वर्ग की दयनीय अवस्था का चित्रण करना व उसके प्रति सहानुभूति प्रकट करना है -

ऐसे गीत नहीं गाने हैं।

जो गीत का साथ नहीं देंगे,

गिरते को हाथ नहीं देंगे,

निर्धन त्रस्त उपेक्षित व्याकुल

जनता के भाव नहीं लेंगे युग कवि तुमको हरगिज, हरगिज्

ऐसे गीत नहीं गाने हैं।[6]

शहरी व ग्रामीण जीवन के बीच भेद को केदारनाथ अग्रवाल ने 'युग की गंगा' में प्रकट किया है। उन्होंने जीवन की विसंगतियों और विषमताओं को उजागर करते हुए लिखा है-

शहर के छोकरे

मैले, फटे, बदबूदार वस्त्र पहने

बिना तेल कंघी के

रूखे उलझाए बाल

नंगे पैर

साम्यवाद के प्रति दृढ़ आस्था को व्यक्त करते हुए कवि ने क्रान्ति का आह्वान किया है क्योंकि साम्राज्यवाद की जड़ों को बिना क्रान्ति के उखाड़ फेंकना संभव नहीं है।

काटो काटो काटो कर लो, साइत और कुसाइत क्या है?

मारो मारो मारो हँसिया, हिंसा और अहिंसा क्या है?

प्रगतिवादी कवियों ने नारी को भोग्या न मानकर उसे सम्मान दिया क्योंकि नारी पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर जीवन संघर्ष में साथ देती है। नारी के संबंध में सुमित्रानंदन पंत जी लिखते हैं -

योनि नहीं है रे नारी वह भी माननी प्रतिष्ठित!

उसे पूर्ण स्वाधीन करो वह रहे न नर पर अवसित।।

www.ignited.in

नागार्जुन की कविता 'प्रेत का बयान' में भूखमरी के शिकार मृत्यु को प्राप्त एक अध्ययन की दशा का यथार्थ चित्रण करते हैं -

ओ रे प्रेत

कड़क कर बोले नरक के मालिक यमराज

सच-सच बतला

कैसे मरा तू

भूख से, अकाल से,

बुखार, कालाजार से[7]

इस प्रश्न के उत्तर में प्रेत ने उत्तर दिया -

सुनिए महाराज

तनिक भी पीर नहीं

दुख नहीं दुविधा नहीं

सरलतापूर्वक निकले थे प्राण

सह न सकी आँत जब पेचिश का हमला।

सुनकर दहाड़ स्वाधीन भारत के

भूखमरे स्वाभिमानी सुशिक्षक प्रेत की

रह गए निरूत्तर महामहिम नरकेश्वर।।[8]

इसी तरह से केदारनाथ अग्रवाल ने भी अपनी कविता 'बंगाल का अकाल' में गरीबी, लाचारी, भूखमरी का मार्मिक चित्र प्रस्तुत किया है। अकाल जैसी समस्या उत्पन्न होने पर चारों तरफ जो भयावह स्थिति उत्पन्न हो जाती है उसके वर्णन में कवि का प्रगतिवादी स्वर उभर कर सामने आया है -

बाप बेटा बेचता है, भूख से बेहाल होकर।

धर्म, धीरज, प्राण खोकर

हो रही अनरीति बर्बर, राष्ट्र सारा देखता है।

बाप बेटा बेचता है।[9]

प्रगतिवादी कविताओं में विद्रोह का स्वर भी दिखाई पड़ता है। यह विद्रोह की भावना राजनीति, साम्राज्यवाद और पूँजीवाद के विरुद्ध दिखायी पड़ती है। बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' अपनी कविता 'विप्लव गायन' में विद्रोह का आह्वान करते हैं जिससे वर्तमान आर्थिक व्यवस्था के बंधन चरमाराकर टूट जाएं व शासन व्यवस्था में परिवर्तन आ जाए -

नियम और उपनियमों के ये बंधन टूक-टूक हो जाएं

विश्वभर पोषक वीणा के सब तार-तार मूक होजाएं

शान्ति दण्ड टूटे उस महारूद्र का सिंहासन हिल थर्राए।

उसकी शोषक श्वासोच्छवास जंग के प्रंगण में घहराए।[10]

इसी काव्यधारा में धर्म, भाग्य व ईश्वर के प्रति अनास्था का स्वर मुखरित हुआ है। प्रगतवादी कवियों ने धर्म, आस्था व ईश्वर को पूँजीपतियों द्वारा अपनाए गए हथकण्डों में सहयोगी माना है -

युगों से देखता हूँ/स्वयं लीलयमान वह भगवान

हटा पाया है नहीं शैतान/मेरी इस धरिण से

इसलिए मैं कर रहा हूँ/ आज यह विद्रोह

अगर चाहे पराजित भगवान की/सेना खड़ी होजाए।[11]

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि प्रगतिवादी कविता ने हर सामान्य समस्या को अभिव्यक्ति प्रदान की है क्योंकि उस समय की राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं ने कुछ ऐसी परिस्थितियों का निर्माण किया जिसके फलस्वरूप उस समय के कवियों के काव्य में प्रगतिवादी स्वर उभर कर सामने आया। प्रगतिवादी स्वर गाँधीवाद का समर्थक नहीं है अपितु हिंसा में विश्वास रखता है। प्रगतिवादी कवि मानता है कि किसी भी क्रान्तिकारी परिवर्तन के लिए हिंसा का सहारा लेना कोई गलत काम नहीं। इसमें समाजवाद को महत्व दिया गया है। समाजवाद के रास्ते में आने वाली हर कठिनाई को प्रगतिवादी कवि दूर करना चाहता है इसलिए उसने इनका यथार्थ वर्णन किया है। हम देखते हैं कि हिन्दी कविता में प्रगतिवादी स्वर का उत्तरोत्तर विकास हुआ है। इस प्रगतिवादी स्वर ने समाज को एक नई दिशा प्रदान की है। प्रगतिवादी स्वर माक्र्सवाद से बहुत अधिक प्रभावित था, जिसके परिणामस्वरूप राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन में नया उभार आया। देश में किसान-मजदूरों के आंदोलन तेज हुए और कांग्रेस में वामपंथी रूझान प्रभावशाली हुआ। भारत जैसे

www.ignited.in

निर्धन देश की जनता के हृदय में समाजवादी विचारधारा के प्रति बहुत आकर्षण उत्पन्न हुआ। इस विचारधारा ने स्वाधीनता के स्वप्न को और अधिक सुस्पष्ट बनाया। इस प्रकार अपने सारे उतार-चढ़ाव के बावजूद प्रगतिवादी काव्यधारा हिन्दी की प्रमुख काव्यधारा बनी। जितनी व्यापक संवेदनशीलता इस काव्य में है, अन्यत्र नहीं है।

संदर्भ सूची

1. कविता, बादल राग, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'
2. कविता, कुकरमुत्ता, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'
3. प्रतियोगिता साहित्य सीरिज, अशोक तिवारी, पृ. 333
4. कविता, युग की गंगा, पृ. 25, केदारनाथ अग्रवाल
5. कविता, अजेय खंडहर, पृ. 16, रांगेय राघव
6. कविता, टूटती शृंखला, महेन्द्र भटनागर
7. कविता, प्रेत का बयान, नागार्जुन
8. उपरिवत्
9. कविता, बंगाल का अकाल, केदारनाथ अग्रवाल
10. कविता, 'विप्लव गायन', बालकृष्ण शर्मा, 'नवीन'
11. कविता संग्रह, पिघलते पत्थर, रांगेय राघव

Corresponding Author

Parveen Devi*

M.A., M.Phil., Net, M.D.U., Rohtak, Haryana